विशेष सूचना

प्रतियोगिता घटना चक्र प्रकाशन की सामग्री एवं नोट्स प्राप्त करने हेतु पाठक–गण सम्बन्धित राशि **प्रतियोगिता घटना चक्र** के

खाता क्र. 1639471626

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया (सुदामा नगर,इन्दौर)

IFSC Code : CBIN 0281384

में जमा कर अपने नाम, पतें, आर्डर एवं सम्बन्धित शाखा का ब्रांच कोड निम्न मोबाइल नं. पर **SMS** करें–

फोन नं. 0731–3595202

मो. 98272–13489, 98262–97489

प्रतियोगिता घटना चक्र आपके घर

इस सुविधा का लाभ उठाइए, निम्न कूपन को भरकर सम्बंधित मनीऑर्डर निम्न पते पर भेजिये–

पूरा नाम : _____

पूर्ण पता : _____

सदस्यता शुल्क

* रजिस्टर्ड डाक :

द्विवार्षिक 1365 रु., वार्षिक – 695 रु., अर्द्ध वार्षिक– 355 रु.

सदस्यता अवधि जानने के लिए

सदस्यता क्रमांक के **प्रथम तीन अंक** सदस्यता क्रमांक और आबलिक के बाद वाले **प्रथम दो अंक माह** को और **अंतिम दो अंक वर्ष** को दर्शाते हैं, यही आपकी सदस्यता की ड्यूडेट है। अगर यह तिथि निकल चुकी है तो समझो आपकी सदस्यता खत्म हो चुकी है। कृपया समय पर नवीनीकरण करवाकर निर्विघ्न पत्रिका प्राप्त करने में सहयोग प्रदान करें।

– : प्रतियोगिता घटना चक्र : –

302 दक्षता आपर्टमेंन्ट,57– गोडबोले कालोनी, अन्नपूर्णा मन्दिर के सामने

इन्दौर –452009 फोन न. 0731–2320489

मो. 98272–13489, 98262–97489 (समय– 8 से शाम 5 बजे)

✍ सम्पादक की कलम से .....

सफलता के लिए जरूरी है, क्रियाशीलता

सफलता की चाह हर व्यक्ति को होती है। सभी चाहते है कि जीवन के जिस किसी भी क्षेत्र में उनका पदार्पण हो सफलता उनके कदम चूमे लेकिन इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जरूरी है सत्त प्रयास और काम के प्रति तन्मयता या क्रियाशीलता की। निरन्तर अभ्यास में जुटे रहना और किसी भी कार्य को पूरी क्रियाशीलता से करना की कार्य ही सफलता का पहला मूलमंत्र है। इसके विपरीत यदि कोई व्यक्ति कार्य को बेहद अनमने भाव से करता है वह न केवल कार्य के प्रति बोरियत में वृद्धि करता है बल्कि उसे लक्ष्य भी बेहद दूर लगने लगता है।

कोई भी कार्य पूरी क्रियाशीलता के साथ करने से जो खुशी और संतुष्टि मिलती है वह अद्वितीय होती है जो और कहीं नहीं मिलती। पूरी क्रियाशीलता और संरचनात्मक के साथ कार्य में रत रहने पर मन और मस्तिष्क एकाग्रचित हो जाता है और शरीर की ऊर्जा में वृद्धि होती है और साथ ही शरीर की रोग प्रतिरोध क्षमता में भी वृद्धि होती है। किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व में क्रियाशीलता के अभाव के कई कारण है लेकिन विशेष तौर पर प्रोत्साहन की कमी ही इसका मुख्य कारण है।

क्रियाशीलता बढाने के लिए व्यक्तित्व में आत्मविश्वास बढाना भी बेहद जरूरी है क्योंकि जो व्यक्ति पूर्ण आत्मविश्वास से भरा है उसे ऐसा महसूस होता है कि जो कुछ भी वह कर रहा है, वह क्रियात्मक है लेकिन इसके विपरीत आत्मविश्वास की कमी होने पर व्यक्ति निरंतर गलतियां करने लगता है जो उसमें क्रियाहीनता को बढावा देती है। कोई निर्धारित क्षेत्र किसी व्यक्ति की सफलता का कारण नहीं होता बल्कि उसकी क्षमता और कार्य के प्रति पूर्ण क्रियाशीलता ही वह गुण होता है जो किसी भी व्यक्ति को उसके लक्ष्य में सफलता प्रदान करता है।

कोई भी दूसरा व्यक्ति जो अपने कार्यों को पूरी क्रियाशीलता से करता हो उसकी सराहना करें और उसके आदर्शों पर चलते हुए मन और कर्म से अपनी क्रियाशीलता को बढाने की और सदैव प्रयासरत रहें। इसके अतिरिक्त अपनी रूचि के कार्य करना और अन्य रचनात्मक कार्य करना भी अपनी क्रियाशीलता को बढाने का अच्छा माध्यम है। संगीत सुनना, पेंटिंग करना जैसे कई रचनात्मक कार्य हैं जिन्हें करने से आपको आनंद प्राप्त होता है आप पूरी निष्ठा से इन्हें करते हैं और फलत: आपकी क्रियाशीलता में वृद्धि होती है। इसी तरह के ऐसे रूचिकर कार्य ढूंढिए जो आप पूरे मन से कर पाएं और धीरे–धीरे हर कार्य के प्रति अपनी क्रियाशीलता का विकास करें और अंत में सबसे जरूरी यह है कि अपनी असफलता के विचार को मन से पूरी तरह निकाल दें क्योंकि जब कभी भी किसी भी छोटे या बड़े कार्य की सफलता के प्रति आपके मन में संशय या संदेह होता है तो आप उसे पूरी निष्ठा से नहीं कर पाते है और परिणामस्वरूप क्रियाशीलता से नहीं कर पाते।

✍ सम्पादक की कलम से .....

कैरियर केवल चांस नही.....

घोर प्रतिस्पर्धा से भरे इस युग में भी जो सफल हो जाते है प्राय: वे इसका सारा श्रेय अपनी मेहनत, भाग्य तथा भगवान को देते है। दूसरी ओर जो असफल रह जाते है, वे सिफारिश, रिश्वत और अपनी बदकिस्मती को वजह मानते है। अपने अनुभव या अपवाद की बात अलग है। सच यहीं है कि सफलता सिर्फ सतत प्रयासों की ही होती है। ऐसे प्रयास जो क्रमश: ढंग से किए गए हो,बशर्ते कि कार्य सही दिशा में सही समय पर सही तरीके से किए गए हों। उनमें परस्पर समन्वय और सम्बद्धता रही हो।

इच्छाओं को जो घटक प्रभावित करते है, उनमें से प्रमुख होते है–सामाजिक, आर्थिक और मानसिक। किसी खास कैरियर के प्रति विशेष चाहत पर प्राय: माता–पिता परिवार और दोस्तों की तो छाया पड़ती ही है साथ ही साथ जो ट्रेंड उस समय चल रहा होता है। उसकी तथा अपने आस–पड़ौस वालों की उपलब्धियों भी दिशा निर्धारण को प्रभावित करती है।

विशेषज्ञों का मानना है कि कैरियर मुख्यत: स्वरूचि, पात्रता, सम्भावना, प्रशिक्षण कौशल तथा व्यक्तित्व पर आधारित होना चाहिए। सरकारी विभागों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, सहकारी संस्थाओं तथा प्राइवेट सैक्टर में अवसरों की तो आज भी कोई कमी नहीं है। बस यदि आवश्यकता है तो उपयुक्त अर्थात योग्यतम अभ्यर्थियों की। उत्पादन, विपणन तथा सेवा के क्षेत्र में देशी तथा विदेशी कम्पनियाँ सदैव उनका स्वागत करने के लिए तैयार रहती है, जो कुशल होते है। अत: कैरियर को कभी भी सिर्फ एक चांस नहीं माना जा सकता है।

सिर्फ अपने भाग्य के सहारे बैठे रहने से तो कभी कुछ नहीं होता। कैरियर कोई लॉटरी नहीं है, जो कि सिर्फ आवेदन रूपी टिकट के एक सहारे से ही हाथ लग जाए। अत: सदैव कर्म में ही विश्वास करना चाहिए तथा क्रमबद्धता को बनाए रखना चाहिए। जो सिर्फ सपने देखते है, उनके हाथ में कुछ नहीं लगता है। अत: बेहतर है कि ज्ञान की रोशनी में निशाना लगाकर ही तीर चलाया जाए, तब फल की प्राप्ति हो सकती है। निशाना लगाना भी एक कला है, जो कि अभ्यास से आती है। उसके प्रति हमारा कितना लगाव है, यह बात भी बहुत महत्व रखती है। कैरियर को सिर्फ एक चांस मानने का अर्थ है–भूसे के ढेर में से सुई की तलाश करना। कपड़ों की ढेरी लगाकर बेचने वाले तो फुटपाथों पर ही रह जाते है जबकि बड़े–बड़े शोरूमों में तो कपड़ों के सारे डिब्बे बहुत तरीके से आलमारी में सजे रहते है, इसी प्रकार कैरियर बनाने की भी बात है। यह काम भी भवन बनाने जैसा होता है। नींव से लेकर दरो दीवार, खिड़की–दरवाजे सब कुछ यदि वैल प्लैन्ड न हो तो सब कुछ धराशायी हो जाता है।

अत: शुरू से ही तैयारी करके चलने वालों को ही सफलता और श्रेय प्राप्त होता है। वे अपने कैरियर को अपनी रूचि के अनुसार साकार कर लेते है, क्योंकि वे सक्षम और सुयोग्य होते है।

शुभकामनाओं सहित, –सुधीर वाघेला